तावीषी, स्त्री, (ताविषी+पृषोदरादित्वात् दीर्घः।) चन्द्रकन्या। इति मेदिनी। ते, ३८॥ (इन्द्रकन्या। इति क्वचित्॥)

ताहुरिः, पुं, हस्वराशिः। इति दीपिका॥

तिक, ऋ ङ गत्याम्। इति कविकल्पद्रुमः॥ (भ्वां-आत्मं-सकं-सेट्।) ऋ, अतितेकत्। ङ, तेकते। इति दुर्गादासः॥

तिक, न आस्कन्दे। वधे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (स्वां-परं-सकं-सेट्।) न, तिक्नोति। इति दुर्गादासः॥

तिक्तं, क्ली, (तेजयतीति। तिज+बाहुलकात् क्तः।) पर्पटिकौषधिः। इति हेमचन्द्रः॥

तिक्तः, पुं, (तेजयतीति। तिज+सामान्यापेक्षज्ञापकात् चुरादीनां णिजभावे गत्यार्थाकर्म्मकेति क्तः।) रसविशेषः। तित इति भाषा॥ (यथा, सुश्रुते। १। ४२।

"यो गले चोषमुत्पादयति मुखवैशद्यं जनयति भक्तरुचिञ्चापादयति हर्षञ्च स तिक्तः॥")

स वाय्वाकाशगुणबाहुल्यात् भवति। इति शिवदासः॥ तस्य गुणाः। जन्तुकुष्ठज्वरार्त्तिकासदाहनाशित्वम्। रोचनत्वम्। इति राजनिर्घण्टः॥ शीतलम्। तृषामूर्च्छापित्तकफविषोत्क्लेशरक्तगदनाशित्वम्। स्वयमरोचिष्णुत्वम्। कण्ठस्तन्यास्यशोधनत्वम्। वातलत्वम्। अग्निकारित्वम्। नासाशोषणत्वम्। रूक्षत्वम्। लघुत्वञ्च। अतियुक्तस्य तस्य गुणाः। शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्त्तिकम्पमूर्च्छातृषाकारित्वम्। बलशुक्रक्षयप्रदत्वञ्च। इति भावप्रकाशः॥ *॥

("तिक्तास्त्वो वत वातलोऽपि हि हृणां कुष्ठादिदोषापहः
सोऽम्लः सर्व्वरुजापहो भ्रमहरो रुच्योऽपि संक्लेदकृत्।
जिह्वास्फोटकनाशनोऽथ भवति चोग्रान्वितानां हितो
कष्ठोत्क्लान्तिहरः प्रसह्य गुणकृत् निम्बादिकानां रसः॥"

इति हारीते प्रथमे स्थाने चतुर्थेऽध्याये॥) सुगन्धः। इति मेदिनी। ते, ९१॥ (सुरभिः। यथा, माघे। ५। ३३।

"नादातुमन्यकरिसक्तमदाम्बुतिक्तं
धूताङ्कुशेन न विहातुमपीच्छताम्भः॥"

तिक्तस्तिक्तरसोऽस्यास्तीति। अर्श आदित्वात् अच्।) कुटजवृक्षः। इति शब्दचन्द्रिका॥ वरुणवृक्षः। इति शब्दमाला॥ तिक्तरसयुक्ते, त्रि। इत्यमरः। १। ५। ६॥

तिक्तकः, पुं, (तिक्तेन तिक्तरसेन कायतीति। कै+कः।) पटोलः। इत्यमरः। २। ४। १५५॥ चिरतिक्तः। इति शब्दरत्नावली॥ चिरता इति भाषा॥ (यथा, वाभटे चिकित्सितस्थाने। ३।

"पित्तकासे तनुकफे त्रिवृतां मधुरैर्युताम्।
युञ्ज्यात् विरेकाय युतां घनश्लेष्मणि तिक्तकैः॥")

कृष्णखदिरः। इति शब्दमाला। इङ्गुदीवृक्षः। इति भावप्रकाशः॥ (तिक्तप्रधाने, त्रि। यथा, सुश्रुते। ४। २४।

"निम्बश्च तिक्तके श्रेष्ठः कषाये खदिरस्तथा॥")

द्रव्याणां गणः। यथा चक्रपाणिसंग्रहे ज्वराधिकारे।

"लङ्घ्यते सलिलञ्चोष्णं दद्याद्वातकफज्वरे।
मद्योत्थे पैत्तिके वापि शीतलं तिक्तकैः शृतम्॥"
"मुस्तपर्पटकोशीरचन्दनोदीच्यनागरैः।
शृतशीतं जलं दद्यात् पिपासाज्वरशान्तये॥"
"तिक्तकैः शृतमिति यदुक्तं तदाह मुस्तेत्यादि।"

इति तट्टीका॥)

तिक्तकन्दिका, स्त्री, (तिक्तरसप्रधानः कन्दो मूलं सोऽस्त्यस्या इति। तिक्तकन्द+ठन्।) गन्धपत्रा। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तका, स्त्री, (तिक्तेन रसेन कायतीति। कै+कः।) कटुतुम्बी। इति शब्दरत्नावली॥ (कटुतुम्बीशब्देऽस्या विवरणं ज्ञातव्यम्॥)

तिक्तगन्धिका, स्त्री, (तिक्तो गन्धो यस्याः। कप् ततष्टाप् अत इत्वञ्च।) वराहक्रान्ता। इति शब्दमाला॥

तिक्तगुञ्जा, स्त्री, (गुञ्जेव तिक्ता। राजदन्तादित्वात् प्राङ्निपातः।) करञ्जः। तत्पर्य्यायः। सुद्रष्टा २ रक्षचा ३ विह्वपर्कटी ४। इति हारावली। १०१॥

तिक्ततण्डुला, स्त्री, (तिक्तस्तण्डुलोऽन्तःशस्यं यस्याः।) पिप्पली। इति राजनिर्घण्टः॥ (अस्याः पर्य्याया यथा,—

"पिप्पली चपला शौण्डी वैदेही मागधी कणा।
कृष्णोपकुल्या मगधी कोला स्यात्तिक्ततण्डुला॥"

इति वैद्यकरत्नमालायाम्॥)

तिक्ततुण्डी, स्त्री, (तिक्ततुम्बी। पृषोदरादित्वात् साधुः।) कटुतुम्बीलता। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्ततुम्बी, स्त्री, (तिक्ता तुम्बी।) कटुतुम्बी। इति रत्नमाला॥

तिक्तदुग्धा, स्त्री, (तिक्तं दुग्धं क्षीरं यस्याः।) क्षीरिणी। अजशृङ्गी। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तधातुः, पुं, (तिक्तस्तिक्तरसप्रधानो धातुः।) पित्तम्। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तपत्त्रः, पुं, (तिक्तानि पत्त्राणि यस्य।) कर्कोटकः। इति हेमचन्द्रः। ४। २५६॥ काकरोल इति भाषा॥

तिक्तपर्व्वा, [न्] पुं, (तिक्तं पर्व्व ग्रन्थिर्यस्य।) दूर्व्वा। इति जटाधरः॥ स्त्री, हिलमोची। गुडूची। यष्टिमधु। इति मेदिनी। ने, २३७॥

तिक्तपुष्पा, स्त्री, (तिक्तानि पुष्पाणि यस्याः।) पाठा। इति राजनिर्घण्टः॥ (पाठाशब्देऽस्या विवरणं ज्ञातव्यम्॥)

तिक्तफलः, पुं, (तिक्तानि फलानि यस्य।) कतकवृक्षः। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तफला, स्त्री, (तिक्तानि फलानि यस्याः।) यवतिक्तालता। वार्त्ताकी। मङ्गुसणा। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तभद्रकः, पुं, (तिक्तस्तिक्तरसप्रधानो भद्रो हितकारी चेति कर्म्मधारयः। ततः स्वार्थे कन्।) पटोलः। इति शब्दचन्द्रिका॥

तिक्तमरिचः, पुं, (तिक्तो मरिच इव।) कतकवृक्षः। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तरोहिणिका, स्त्री, (तिक्तरोहिणी+स्वार्थे कन् टाप् पूर्व्वह्रस्वश्च।) कटुका। इति रत्नमाला॥

तिक्तरोहिणी, स्त्री, (तिक्ता सती रोहतीति। रुह+णिनिः+ङीप्।) कटुका। इति राजनिर्घण्टः॥ (कटुरोहिणीशब्देऽस्या विवृतिर्ज्ञातव्या॥)

तिक्तवल्ली, स्त्री, (तिक्ता वल्ली।) मूर्व्वालता। इति रत्नमाला॥

तिक्तवीजा, स्त्री, (तिक्तं वीजमस्याः।) कटुतुम्बी। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तशाकः, पुं, (तिक्तः शाको यस्य।) खदिरवृक्षः। वरुणवृक्षः। (अस्य पर्य्याया यथा,—

"वरुणस्तिक्तशाकश्च सेतुस्तत्रोऽभयो यतिः॥"

इति वैद्यकरत्नमालायाम्॥)

पत्रसुन्दरवृक्षः। इति मेदिनी। के, १६१॥

तिक्तसारं, क्ली, (तिक्तः सारो निर्य्यासो यस्य।) दीर्घरोहिषकतृणम्। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तसारः, पुं, (तिक्तः सारो निर्य्यासोऽस्य।) खदिरवृक्षः। इति रत्नमाला॥ (खदिरशब्देऽस्य गुणादयो ज्ञेयाः॥)

तिक्ता, स्त्री, (तिक्तस्तिक्तरसोऽस्त्यस्याः। अच् ततष्टाप्।) कटुरोहिणी। इति मेदिनी। ते, २२॥ (यथास्याः पर्य्यायाः।

"कट्वी तु कटुका तिक्ता कृष्णभेदा कटुम्भरा।
अशोका मत्स्यशकला चक्राङ्गी शकुलादनी॥
मत्स्यपित्ता काण्डरुहा रोहिणी कटुरोहिणी॥"

इति भावप्रकाशस्य पूर्व्वखण्डे प्रथमे भागे॥)

पाठा। इति रत्नमाला। यवतिक्ता लता। मङ्गुसणा। इति राजनिर्घण्टः॥ छिक्कनी। इति भावप्रकाशः॥

तिक्ताख्या, स्त्री, (तिक्तः आख्या अभिधानं यस्याः।) कटुतुम्बी। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्ताङ्गा, स्त्री, (तिक्तं अङ्गं यस्याः।) पातालगरुडीलता। इति राजनिर्घण्टः॥

तिक्तिका, स्त्री, (तिक्ता+स्वार्थे कन्। टापि अत इत्वम्।) कटुतुम्बी। इति शब्दरत्नावली॥

तिग, न हिंसायाम्। आस्कन्दे। इति कविकल्पद्रुमः॥ (स्वां-परं-सकं-सेट्।) न, तिग्नोति। आस्कन्दः केचिन्न मन्यते। इति दुर्गादासः॥

तिग्मं, क्ली, (तेजयति उत्तेजयतीति। तिज+"युजिरुजितिजां कुश्च।" उणां। १। १४५। इति मक् कवर्गश्चान्तादेशः।) तीक्ष्णम्। खरम्। तद्वति, त्रि। इत्यमरः। १। ४। १५॥ (यथा, महाभारते। १। २०। ११।

"तिग्मवीर्य्यविषा ह्येते दन्दशूका महाबलाः॥")

वज्रम्। इति निघण्टुः। २। २०॥ पुं, चान्द्रविशेषः। यथा, विष्णुपुराणे। ४। २१। ३।